कुल पृष्ठ संख्या–24 (कवर पेज सहित)

क्रम संख्या....

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

माध्यमिक परीक्षा

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिये)

Candidate's Roll No. In English

(In Figures) | | | | | | | |

(In Words) -

परीक्षार्थी का नामांक हिन्दी में

शब्दों में

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी [✓] अंग्रेजी [ ]

विषय संस्कृत

परीक्षा का दिन.....

दिनांक .....

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालना अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य हैं, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदारणार्थ : 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी
(परीक्षक के उपयोग हेतु)

प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1		19	
2		20	
3		21	
4		22	
5		23	
6		24	
7		25	
8		26	
9		27	
10		28	
11		29	
12		30	
13		31	
14		योग	
15		प्राप्त अंकों का कुल योग (Roundoff)	
16		अंकों में	शब्दों में
17			
18			

परीक्षक के हस्ताक्षर ..... संकेतांक

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 58 जी.एस.एम. क्रीमवोव कागज ही उपयोग में लिया गया है। 161/2017

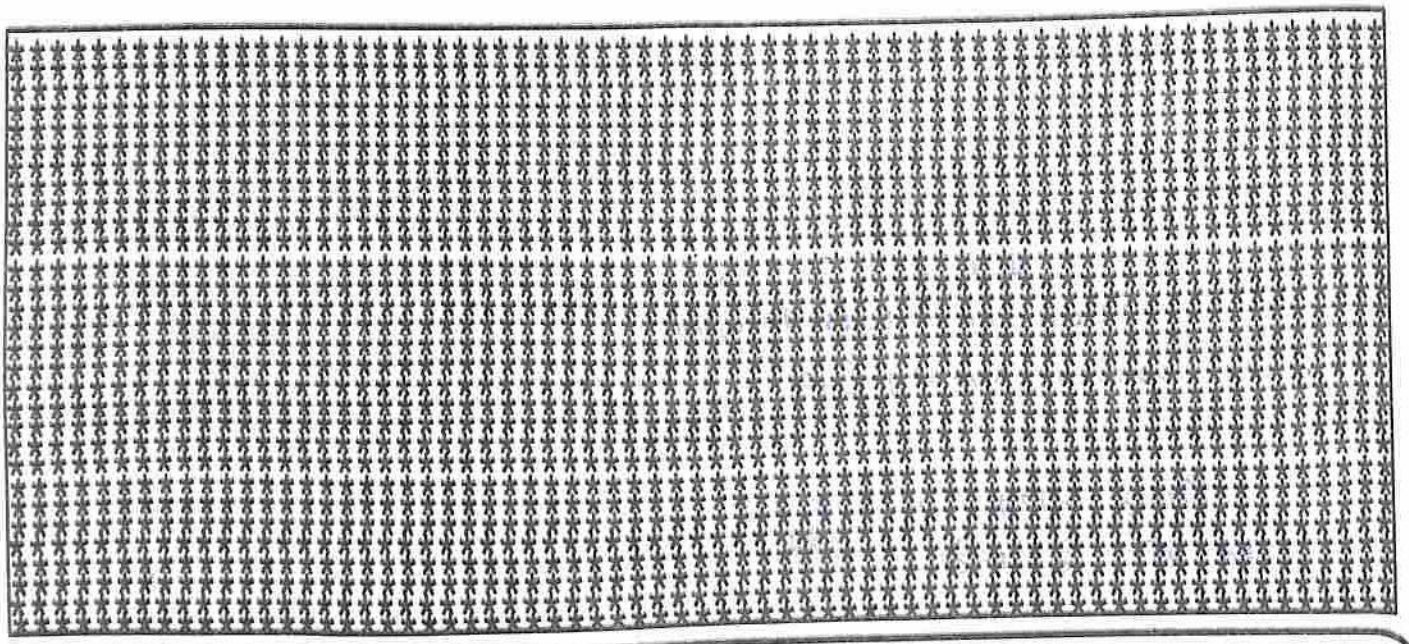

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका पृथक से उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशषां पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में "समाप्त" लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी।
   (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा "अनुचित साधनों के प्रयोग" के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।
   (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर–पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिये। परीक्षार्थी उत्तरपुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या की जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।
   (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केलक्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रोनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।
   (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिखकर लावें। टेबुल के आस–पास कोई अवैध सामग्री नहीं होनी चाहिये, इसकी जांच कर लें।
   (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।
5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित है। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधाभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उ० 1.

संकेत :- अनन्तरम् _ _ _ _ _ _ _ _ _ अकरोत् ।

प्रसंग :- प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पंदना' के 'संघे शक्ति' शीर्षक पाठ से उद्धृत है, इस पाठ के रचयिता पण्डित नारायण शर्मा हैं। मूलतः यह पाठ नारायण शर्मा विरचित संस्कृत ग्रंथ 'हितोपदेश' से संकलित है।

इस गद्यांश में चित्रग्रीव के उपदेश से तथा अन्य कबूतरों की एकता से उनका जाल से मुक्त होने का वर्णन किया गया है।

हिन्दी अनुवाद :-

बाद में, सब जाल में फँस गये, इसके बाद, जिसके वचन सुनकर अथवा बात मानकर वे वहाँ उतरे थे, उसका सब तिरस्कार करने लगे, उसके अपमान को सुनकर कपोतराज चित्रग्रीव ने कहा, "यह इसका दोष नहीं है।" विपत्ति के समय घबरा जाना ही कायर व्यक्ति का लक्षण है। इसलिए धैर्य रखके इस समस्या का कोई उपाय सोचो। अब यही किया जा सकता है। सभी एक-साथ मिलकर जाल के साथ उड़ जाओ।" ऐसा सोचकर सभी पक्षी जाल को लेकर उड़ गए। इसके बाद वह शिकारी उन कबूतरों को जाल के साथ उड़ता देखकर उनके पीछे दौड़ने लगा।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

विशेष:-
[i] गद्यांश की भाषा-शैली सरल, प्रवाहमयी एवं सुबोध है,
[ii] प्रस्तुत गद्यांश से हमें 'एकता में शक्ति होती है' ऐसा सन्देश भी मिलता है,

व्याकरणात्मक टिप्पणी:-
[i] सर्वैरेकचित्तीभूय → सर्वैः + एकचित्तीभूय
→ विसर्ग-रुत्व संधि
[ii] धैर्यमवलम्ब्य → धैर्यम् + अवलम्ब्य
→ अनुस्वार-व्यंजन संधि

3. 2. संकेत:- विद्या विवादाय .... रक्षणाय।

प्रसंग:-
प्रस्तुत श्लोक हमारी पाठ्यपुस्तक 'स्पंदना' के 'सुभाषित रत्नानि' शीर्षक पाठ से उद्धृत है। इस श्लोक में विद्या, धन और शक्ति के उपयोग के संबंध में सज्जन और दुर्जन व्यक्ति के स्वभाव में अन्तर स्पष्ट किया गया है।

हिन्दी अनुवाद:-
कवि कहता है कि दुर्जन व्यक्ति अपनी विद्या का उपयोग दूसरों से विवाद करने में करता है, धन का उपयोग घमण्ड करने में करता है तथा शक्ति का उपयोग दूसरों को पीड़ा पहुँचाने के लिए करता है, परन्तु सज्जन का स्वभाव इससे विपरीत होता है। सज्जन

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

व्यक्ति विद्या का उपयोग ज्ञान के लिए, धन का उपयोग दान करने में तथा शक्ति का उपयोग दूसरों की रक्षा करने में करता है,

विशेष:- [i] प्रस्तुत श्लोक सरल व सुबोध भाषा में रचित है।

[ii] प्रस्तुत श्लोक में अलंकारों की छटा दर्शनीय है।

[iii] इस श्लोक से हमें सज्जन बनकर अपनी विशेषताओं का उपयोग परार्थ करने में करने की शिक्षा मिलती है,

व्याकरणात्मक टिप्पणी:-

[i] साधोर्विपरीतमेतत् → साधो: + विपरीतम् + एतत् → रुत्व, अनुस्वार संधि

[ii] विवादाय → विवाद शब्द - चतुर्थी विभक्ति - एकवचन

उ: 3. संकेत:- न जातु - - - - - करणीयम् ॥

प्रसंग:- प्रस्तुत श्लोक: पद्यांश: अस्माकं 'वंदना' इति पाठ्यपुस्तकस्य 'लोकहितं मम करणीयम्' शीर्षक पाठात् (संस्कृत गीतात्) उद्धृत:। अस्य पाठस्य रचयिता श्रीधरभास्कर वर्णेकर: अस्ति। अस्मिन् श्लोके कवि: अस्मभ्यम् लोकहितार्थ कार्यं कर्तुं प्रेरितं करोति,

BSER-16/2018

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

संस्कृत व्याख्या :-

कविः कथयति यत् वयं दुखान् गणनां न करणीया अर्थात् वयं दुखान् प्रति ध्यानं न करणीयाः। अस्माभिः स्वइ सुखान् प्रति ध्यानम् न करणीयाः। अस्माभिः कार्यक्षेत्रे त शीघ्रता कर्तव्या तथा च मया लोकहितार्थ कार्यं करणीयम्।

विशेषः-
[i] प्रस्तुत पद्यांशस्य भाषा सरला च सरसा अस्ति।
[ii] प्रस्तुत पद्यांशे अलंकारणां छटा दर्शनीया अस्ति।
[iii] अयं पद्यांशः संस्कृत गीतस्य भागः अस्ति। अस्य रागः हिन्दोलरागः अस्ति।

व्याकरणात्मक टिप्पणी :-
[i] करणीयम् → कृ + अनीयर् प्रत्यय
[ii] मम → अस्मद् शब्द - षष्ठी विभक्तिः एकवचनम्

उ० 4. संकेतः - प्रथमा - वत्स (इति निष्क्रान्ता)।

प्रसंगः-

प्रस्तुत नाट्यांशः अस्माकं 'स्पन्दना' इति पाठ्यपुस्तकस्य 'जृम्भस्व सिंहः! दन्तास्ते गणयिष्ये' शीर्षक नाट्याद् उद्धृतः। अस्य रचयिता महाकवि

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

कालिदासः अस्ति। मूलतः अयं नाटकः महाकवि कालिदासेन विरचित नाटकः 'अभिज्ञानशाकुंतलं' इति नाटकाद् उद्धृतः।
अस्मिन् नाट्यांशे प्रथमा तापसी, द्वितीया तापसी तथा च सर्वदमनस्य संवादः वर्तते।

संस्कृत व्याख्या :-
प्रथमा तापसी :- भो पुत्रक! अयं सिंहशावकं त्यज। अहं तुभ्यम् अन्यं क्रीडनकं प्रदानं करिष्यामि।

बालः सर्वदमनः :- कुत्र? कुत्र? मे ददातु (इति कथयित्वा हस्तौ स्वहस्तं प्रसारयति।)

द्वितीया तापसी :- भो सुव्रता! अयं बालकः वाणीमात्रेण सिंहशावकं न त्यजिष्यति। गच्छ तथा च मम उटजात् ऋषिकुमारेण मार्कण्डेयेण वर्णितं मृत्तिकामयूरं आनय तथा च सर्वदमनाय ददातु।

प्रथमा तापसी :- अस्तु। (इति कथयित्वा गच्छति)

विशेषः- (i) प्रस्तुत नाट्यांशस्य भाषा सरला च सरसा अस्ति।
(ii) संवादैः नाट्यांशस्य पात्रेषु पात्राणाम् स्वभावेषु स्वभावस्य अवबोध्य भवति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

व्याकरणात्मक टिप्पणी :-

[i] देह्येतत् → देहि + एतत्
→ यण् सन्धि

[ii] मृत्तिकामयूरास्तिष्ठति → मृत्तिकामयूरः + तिष्ठति → सत्व - विसर्ग संधि

3. 5. [i] 'जयतु सुरभारति' इति पाठस्य रचयिता डॉ. हरिरामआचार्यः अस्ति ।

[ii] 'संघे शक्ति' इति पाठानुसारेण "अद्य प्रातरेव अनिष्टदर्शनं जातं, न जाने किम् अनभिमतं दर्शयिष्यति" इति लघुपतनकः नामक वायसः कथितवान् ।

[iv] महाराणाप्रतापसिंहस्य राज्याभिषेकः 'गोगुन्दा' इति ग्रामे अभवत् ।

[vi] 'मरुसौन्दर्यम्' इति पाठानुसारेण "शुष्कोऽपि निर्दयं सरसः स देशः" इति आचार्येण चरकेण प्रशंसितः ।

[vii] महाराजा सूरजमल्लः बदनसिंहस्य ज्येष्ठपुत्रः आसीत् ।

[viii] "यो यद्वपति बीजं हि लभते तादृशं फलं" इति पाठानुसारेण 'कथं तेषां यायावराणां मया प्रत्युपकारः कर्त्तव्यः ?' इति गंगदत्तेन चिंतितम् ।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उ० 6. का परमो धर्मः ?

उ० 7. पृथिव्यां कति रत्नानि सन्ति ?

उ० 8. एतेन कस्य न अपमानः ?

उ० 9. केषु अन्यतमः सूरजमल्लः आसीत् ?

उ० 10. [i] पृथिव्यां गीतानि गायन्ति देवाः किल गीतकानि,
धन्यास्तु ते भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदमार्गभूताः, भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्॥

[ii] गोपालसाङ्गिको कृष्णः रामो वानरसाङ्गिकः।
साङ्गिकसाङ्गिको बुद्धः महात्मानो हि साङ्गिकाः॥

उ० 11. [क] अस्य गद्यांशस्य समुचितं शीर्षकं – 'विश्वबन्धुत्वम्' अस्ति।

[ख] (i) दैनन्दिन – व्यवहारे यः सहायतां करोति सः बन्धुः भवति।
(ii) समर्थाः देशाः असमर्थान् देशान् प्रति उपेक्षाभावं प्रदर्शयन्ति।
(iii) अधुना संसारे कलहस्य अशान्तेः च वातावरणम् अस्ति।
(iv) सर्वेषु समत्वेन प्रकृतिः व्यवहरति।
(v) सूर्यचन्द्रयोः प्रकाशः सर्वत्र समानरूपेण प्रसरति।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

[ग] (i) मानवाः ।
(ii) आवश्यकता ।
(iii) मानवाः ।
(iv) उपरि ।

उ० 12.

शब्दः	विच्छेदं	सन्धेः नाम
[i] स्वागतम्	सु + आगतम्	यण् - स्वर संधि
[ii] दिग्गजः	दिक् + गजः	जश्त्व - व्यंजन संधि

उ० 13.

विच्छेदं	संधिः	सन्धेः नाम
[i] पो + अनः	पवनः	अयादि - स्वर संधि
[ii] रामः + च	रामश्च	सत्व - विसर्ग संधि

उ० 14.
(i) प्रतिवारं → वारं वारं प्रति → अव्ययीभाव समास
(ii) महाराजः → महान् राजा इति → कर्मधारय समास
(iii) माता च पिता च → मातापितरौ → द्वंद्व समासः

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

3. 15. [i] ग्रामं परितः केदाराणि सन्ति।

विभक्तिः → रेखांकितपदे द्वितीया विभक्तिः अस्ति।

कारणम् → 'परितः' शब्दस्य योगे द्वितीया विभक्तिः भवति।

[ii] सीता गीतया सह पठति।

विभक्तिः → रेखांकितपदे तृतीया विभक्तिः अस्ति।

कारणम् → 'सह' शब्दस्य योगे तृतीया विभक्तिः भवति।

[iii] नगरात् पृथक् आम्रम् अस्ति।

विभक्तिः → रेखांकितपदे पञ्चमी विभक्तिः अस्ति।

कारणम् → 'पृथक्' शब्दस्य योगे पञ्चमी विभक्तिः भवति।

3. 16. [i] प्रसन्नो बालकः शङ्कमानः। (शंक् + शानच्)

[ii] पठन् गोपालः गच्छति। (पठ् + शतृ)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	3. 17/18. [i]	ज्ञानवान् सर्वत्र पूज्यते।
		ज्ञानवान् → ज्ञान + मतुप् प्रत्यय
	[ii]	चटका वृक्षे तिष्ठति।
		चटका → चटक + टाप् प्रत्यय
	3. 18. [i]	सूर्यः आग्नेयलोकः इव प्रतिभाति।
	[ii]	यत्र गच्छति तत्र तिष्ठति।
	[iii]	कार्यस्य सहसा निर्णयं न करणीयम्।
	3. 19.	त्वया पाठः लिख्यते।
	3. 20.	रामः पुस्तकं पठति।
	3. 21.	अहं साधुं पश्यामि।
	3. 22.	[क] सीमा प्रातः दशकलोत्तर नववादने विद्यालयं गच्छति। (9:10)
		[ख] सा पुनः पञ्चोत्तर त्रिवादने गृहं आगच्छति। (3:05)

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
	उ० 23.	[i] बालिकातिस्रः प्रतिदिनं उपवनं गच्छन्ति ।
		[ii] पथे चत्वारः बलिवर्दाः कलहं कुर्वन्ति ।
		[iii] शिष्यः गुरवे निवेदयति ।

BSER-164/2018

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उ० 24.

प्रार्थना - पत्रम्

सेवायाम्

श्रीमन्तः प्रधानाचार्य महोदयः,
राजकीय आदर्श उच्च माध्यमिक विद्यालयः,
कंचनपुरः ।

विषयः - आवश्यककार्यवशाद् अवकाशार्थं प्रार्थना पत्रं,

महोदय,

उपर्युक्त विषयान्तर्गत सविनयम् निवेदनम् आस्ति यत् अहं भवान् विद्यालयस्य दशम्याः कक्षायाः छात्रः आस्ति, मम गृहे एकं आवश्यक कार्यं आस्ति, अस्मात् कारणादेव अहं पञ्चदिनानि यावत् विद्यालये आगन्तुम् न शक्नोमि।

अतः सविनयं निवेदनं आस्ति यत् भवान् मे 22-03-2018 दिनांकतः 27-03-2018 दिनांक पर्यन्तम् पञ्चदिनानाम् अवकाशं प्रदानं कृत्वा मामनुग्रहीष्यन्ति श्रीमन्तः।

सधन्यवादम् ।

भवदाज्ञाकारी शिष्यः,
दिनांक → 22-03-2018 नाम → सोमनाथः
कक्षा → दशम

प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
उ० 25-	पुनीत:- सुरेश ! त्वं कुत्र गच्छसि ?
	सुरेश: - पुनीत ! त्वं अपि आगच्छ।
	पुनीत: - तत् किं भवनम् अस्ति ?
	सुरेश: - तत् चिकित्सालयभवनम् अस्ति । आवाम् अपि मातुलं द्रष्टुम् चलाव: ।
	पुनीत: - स: केन रोगेण पीड़ित: अस्ति?
	सुरेश: - स: उच्चरक्तचापेन पीड़ित: अस्ति।
	पुनीत: - ते श्वेतप्रावारकधारका: के सन्ति। ते किं कुर्वन्ति ?
	सुरेश: - ते चिकित्सका: सन्ति, ते उपचारं कुर्वन्ति।
उ०26.	[i] माता पुत्राय उपदिशति।
	[v] तं विना त्वं न गच्छति।
	[ii] मह्यं फलानि रोचन्ते।
	[iv] ~~कक्षात्~~ कक्षात् बहि: शिक्षका: सन्ति। ~~कक्षाया:~~
	[vi] ताभि: सह ~~सुनीता~~ सुनीता आगच्छत्।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

उ० 27. [i] शीतल: पवन: मन्दं मन्दं प्रवहति।

[ii] सर्वत्र सुरभितकुसुमानां सुगंध: प्रसृत: अस्ति।

[iii] कुसुमाकर: वसन्त समागत: अस्ति,

[iv] भारते षट् ऋतव: भवन्ति।

[v] तेषु वसन्त: श्रेष्ठ: अस्ति।

[vi] वसन्ते उद्यानानां शोभा दर्शनीया भवति,

उ० 28. (क) (iv) पुरा एकस्मिन् वने एका चटका प्रतिवसति स्म।

(ख) (v) कालेन तस्या: सन्तति: जाता,

(ग) (vii) एकदा कश्चित् प्रमत्त: गज: तत्र आगतवान्।

(घ) (vi) वृक्षस्य अध: आगत्य तस्य शाखां शुण्डेन अत्रोटयत्।

(ङ) (iii) चटकाया: नीडं भुवि अपतत्, तेन अण्डानि विशीर्णानि।

(च) (ii) अथ सा चटका व्यलपत्,

66 समाप्त 99